International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925(Online), Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 04(I), October - December, 2025, pp. 106-109

मुगलकालीन सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन

धर्म पाल[1*] | डॉ. तपेन्द्र सिंह शेखावत[2]

[1]शोधार्थी (इतिहास विभाग), श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय पीलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान।
[2]सहायक आचार्य (इतिहास विभाग), श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय पीलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान।

[*]Corresponding Author: dharmpalswami683@gmail.com

Citation: पालधर्म, & शेखावततपेन्द्र. (2025). मुगलकालीन सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 07(04(I)), 106–109. https://doi.org/10.62823/ijemmasss/7.4(i).8267

सार

हिन्दुओं के धार्मिक नेताओं और सन्तों ने हिन्दू–मुस्लिम विचारों के समन्वय का सफल प्रयास किया तो मुसलमानों के सूफी सम्प्रदाय तथा उनके नेताओं और कवियों ने भी हिन्दू सिद्धान्तों व परम्पराओं को ग्रहण किया। सामंजस्य की मंगलकारिणी भावना का प्रभाव इस्लाम पर भी कम न हुआ। उसमें कोमलता और सरसता आ गई। उसके स्वरूप में परिवर्तन हुआ और सूफी सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव हुआ। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही इस सम्प्रदाय के सन्तों को मानने लगे उनकी समाधियाँ इन दोनों समुदायों के लिये तीर्थस्थान बन गईं। ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती, निजामुद्दीन औलिया, शेखा सलीम चिश्ती ऐसे प्रसिद्ध सूफी संत थे जिनका हिन्दू भी उतना ही आदर करते थे जितना मुसलमान।

शब्दकोशः *हिन्दु, मुसलमान, परम्परा, सामंजस्य, मंगलकारी, भावना, तीर्थस्थान, सम्प्रदाय, समाधियाँ, तीर्थस्थान, मंदिर, मस्जिद, समुदाय, संस्कृति, सल्तनतकाल, शक्तियाँ, ग्रामीण, पंचायत, उदारता, अनाचार, कटुत्ता, प्रचलन, शिष्टाचार, अनुसरण, स्त्रियाँ, माँग।*

प्रस्तावना

सांस्कृतिक समन्वय के विशेष प्रयत्न मुगल काल में हुए किन्तु सल्तनत काल में भी कुछ प्रान्तीय शासक ऐसे हुए जिन्होंने कट्टर मुसलमान होते हुए भी धार्मिक सहिष्णुता और हिन्दुओं के प्रति उदारता का परिचय दिया। उन्होंने साहित्य और स्थापत्य के क्षेत्र में विशेष रूप से ऐसे कार्यों को प्रोत्साहन दिया जिससे हिन्दू–मुस्लिम समन्वय की शक्तियाँ बलबती हुईं ।

राजनीतिक क्षेत्र में धीरे–धीरे हिन्दू–मुस्लिम सहयोग की भावना दृष्टिगोचर होने लगी। केन्द्रीय क्षेत्रों मे जितना मुस्लिम अनाचार और प्रभाव बना रहा उतना ग्रामीण क्षेत्रों में नहीं रहा। ग्रामों में पंचायतें पहले की तरह ही काम करती रहीं। आवश्यकतानुसार हिन्दू कर्मचारियों की संख्या में भी वृद्धि हुई। कभी–कभी उच्च पदों पर हिन्दुओं को भी रख दिया जाता था। बंगाल में हुसैनशाह ने कई हिन्दुओं को कई उच्च पद दिए। बीजापुर तथा गोलकुंडा के शासकों ने हिन्दुओं को उच्च पदों पर आसीन किया।

कटुत्ता और संघर्ष के बावजूद दोनों संस्कृतियों ने एक दूसरे को प्रभावित किया। हिन्दुओं में मुसलमानों के सम्पर्क के कारण अनेक नवीन प्रथायें उत्पन्न हुईं। हिन्दू स्त्रियों में पर्दे का विस्तृत रूप से प्रचलन हो गया।

[*] *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

हिन्दुओं में बाल विवाह जोर पकड़ता गया। कन्या का जन्म एक अशुभ घटना मानी जाने लगी। मुसलमानों के आने के कारण भारतीय सामाजिक जीवन में दासता की अवांछनीय प्रथा घर कर गई। मुसलमानों की वेश–भूषा और शिष्टाचार भी हिन्दू समाज में प्रचलित हो गये। जुआ खेलना, शराब पीना एक साधारण प्रथा बन गई। मुस्लिम राज संस्था का जो शिष्टाचार या बैठक के लिए जो विभिन्न श्रेणियाँ थीं, उनका अनुसरण हिन्दू नरेशों ने तथा सामन्तों ने किया। इस्लाम का प्रभाव हिन्दू रीति–रिवाजों, संगीत, पोशाक, त्योहार, मेलों, पाक विधि, विवाह, मराठी, राजपूत, सिक्खों की दरबारी संस्थाओं पर विशेष रूप से पड़ा।

मुस्लिम विजेताओं ने हिन्दू नारियों और राजकुमारियों से विवाह किये। इन हिन्दु स्त्रियों ने अपने नवीन गृहों में हिन्दू प्रथाओं को प्रस्तावित किया जिससे मुसलमान प्रभावित हुए। कुछ विद्वानों का मत है कि मुसलमानों में नैतिकता हिन्दुओं के विचार और प्रथाओं से अत्यधिक प्रभावित हुईं। हिन्दू प्रभावों के अन्तर्गत विधवा विवाह बिरला हो गया। हिन्दू समाज के सम्पर्क के कारण मुसलमानों में वर्ग भेद की भावना का उत्कर्ष हुआ। सामाजिक क्षेत्र में हिन्दुओं का नजर लग जाने का अन्ध–विश्वास मुस्लिम समाज में भी व्याप्त हो गया। इस अन्ध विश्वास का उतारा व आरती की प्रथा मुसलमानों ने अपना ली एवं इसे शनिसादश कहा गया। हिन्दू पगड़ी मुसलमानों में लोकप्रिय हो गई। दैनिक जीवन में मुसलमानों ने हिन्दू प्रथाओं का अनुकरण किया। अशरफ के अनुसार मुसलमानों का सब्बेरात का त्यौहार हिन्दुओं की शिव–रात्रि की नकल है। भारत में बसने के बाद मुसलमान शकुन विचारने लगे। उनकी स्त्रियाँ श्माँगश भरने लगीं। नाक में नथ, हाथों में शंख की चूड़ियाँ पहनने लगीं। मुसलमानों में भी हिन्दुओं की देखा–देखी मरने पर दावत करने तथा खैरात की प्रथा चल पड़ी।

कालान्तर में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पारस्परिक सामंजस्य और सहिष्णुता की धारा प्रवाहित होने से धीरे–धीरे दोनों सम्प्रदायों में सहनशीलता की प्रवृत्ति आई। मुहम्मद तुगलक अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए हिन्दू योगियों के पास जाता था। अलाउद्दीन जैसा कट्टर सुल्तान भी हिन्दू धर्म के प्रसिद्ध नेताओं का आदर करने लगा, फिरोज तुगलक ने रत्नशेखर को जो हिन्दू कवि था, अच्चामा सम्मान प्रदान किया था। आगे चलकर शेरशाह और विशेषकर अकबर ने इस समन्वय की भावना को प्रोत्साहित दिया।

सोलहवीं शताब्दी में मुगलों के आने के बाद भारतीय संस्कृति और परम्परा के इस समन्वय का रूप निखरा। मुगल सम्राट औरंगजेब जब समन्वय की प्रवृति से पथभ्रष्ट हुआ और अनुदार बना तो मुगल साम्राज्य छिन्न–भिन्न होकर नष्ट हो गया। पश्चिम से आने वाली शक्तियों के लिए शासन सत्ता हथियाने का मार्ग प्रशस्त हो गया। अन्तिम मुगल सम्राट बहादुरशाह को 1857 ई. की क्रान्ति के बाद अंग्रेजों ने बन्दी बनाकर रंगून भेज दिया और तब बचा–खुचा मुगल साम्राज्य भी सदा के लिए समाप्त हो गया और हिन्दू–मुस्लिम समन्वय से नवीन संस्कृति और परम्परा का निर्माण हुआ। हम दोनों संस्कृतियों के एक–दूसरे पर पड़ने वाले प्रभावों का वर्तमान में भारतीय संस्कृति और परम्परा का जो रूप है वह बहुत कुछ दोनों संस्कृतियों का सम्मिश्रण है।

हिन्दुओं पर मुसलमानों के रीति–रिवाजों का गहरा प्रभाव पड़ा। बाल–विवाह बहु–विवाह और पर्दा प्रथा मुसलमानों के सम्पर्क के फलस्वरूप हिन्दू समाज में प्रचलित हुईं। भारतीय सामाजिक जीवन में दासता की प्रथा ने भी बल पकड़ा। मुसलमान शासक हजारों की संख्या में दास रखते थे, उनका अनुकरण हिन्दू राजाओं और सामन्तों ने भी किया। कट्टर हिन्दुओं ने इस्लाम के बढ़ते हुए प्रचार को देख कर जाति प्रथा के बन्धन बहुत दृढ़ कर दिए। मुस्लिम वेश भूषा का भी हिन्दू समाज पर काफी प्रभाव पड़ा। हिन्दू लोग भी चूड़ीदार पायजामा, शेरवानी तथा लम्बे कोट पहनने लगे। पान चबाने का प्रचार बहुत बढ़ गया एवं दरबार के तौर–तरीकों तथा अभिवादन के मुस्लिम ढंग को भारतीयों ने अपना लिया। माँस और शराब का प्रचार बहुत बढ़ गया। हिन्दू भी फारसी पढ़ने लगे और उसमें रचनाएँ करने लगे। फारसी तथा हिन्दी के मिश्रण से उर्दू का जन्म हुआ और हिन्दू मुसलमानों की मिली–जुली तहजीब का विकास होने लगा। और हिन्दू महिलाओं की दशा पहले की अपेक्षा अधिक निम्नस्तर पर आ गई। स्त्रियों का अपने स्वामियों अथवा अन्य पुरुष सम्बन्धी पर आश्रित होना समाज की प्रमुख विशिष्टता हो गई। मुसलमानों से अपने धर्म और सतीत्व की रक्षा करने हेतु हिन्दू स्त्रियों में सती प्रथा देशव्यापी हो गई ।

मुसलमानों पर भी हिन्दू रस्म–रिवाजों का गहरा प्रभाव पड़ा। हिन्दुओं सम्पर्क से श्एक पत्नीव्रतश के महत्व को समझा और बहुत से मुसलमानों ने एक पत्नी रखने की प्रथा को व्यवहार में अपनाया। हिन्दू सम्पर्क के कारण मुसलमानों में विधवा विवाह की प्रथा घटने लगी। मुस्लिम विजेताओं ने हिन्दू नारियों, रानियों और राजकुमारियों से विवाह किए। इन हिन्दू स्त्रियों ने अपने नवीन गृहों में हिन्दू प्रथाओं को प्रस्तावित किया जिससे मुसलमान प्रभावित हुए। मुसलमानों के अन्तःपुरों में हिन्दू महिलाओं का प्रभाव उन तत्वों में से एक था जिन्होंने इस्लाम और हिन्दू धर्म का समन्वय कराया। भारत में आने के बाद मुसलमानों में भी हिन्दुओं की तरह सामाजिक विभेद की भावनाएँ उत्पन्न हो गईं। उनमें भी अरब, तुर्क, ईरानी, मंगोल, पठान आदि जातियों की उत्पत्ति हुई। भारतीयों की भाँति उनमें भी ऊँच–नीच का भेदभाव शुरू हुआ। मुसलमानों के विविध वर्ग एक ही नगर में परस्पर एक–दूसरे से पृथक होकर विभिन्न मुहल्लों में रहने लगे, उदाहरण के लिए शेख और सैयद वर्ग। मुसलमान ने जाति प्रथा तथा अछूत भावना अपना ली। उनमें नाना व्यापारिक जातियाँ बन गईं। कालान्तर में भारतीयों की रूढ़िवादिता और उनके अन्ध विश्वासों ने मुसलमानों में भी घर कर लिया तथा वे भूत–प्रेत व श्उतारा श आदि में विश्वास करने लगे। दैनिक जीवन की अनेक बातें जो हिन्दुओं में थीं, मुसलमानों ने पसन्द कीं। नित्य स्नान करने और शरीर को साफ व स्वच्छ रखने के महत्व को वे मान गए। हिन्दू पगड़ी को मुसलमानों ने अपना लिया। हिन्दुओं के त्यौहारों में मुसलमान और मुसलमानों के त्यौहारों में हिन्दू आने जाने लगे। हिन्दू परिवारों में हुक्का पीना प्रचलित हुआ जबकि भारतीय मुसलमान पान खाने के शौकीन बन गए।

शोध के सोपान

हिन्दू एवं मुसलमान दोनों धर्म वालों ने एक दूसरे के सन्तों का आदर करना आरम्भ कर दिया। हिन्दू मुस्लिम संतों का आदर करके उनके मजारों पर मिष्ठान चढ़ाते थे तो मुसलमान भी हिन्दू साधकों के प्रति श्रद्धा भाव प्रकट करत थे। हिन्दुओं ने मुस्लिम दरगाहों में माथा टेकना, मजार में चोटी लगवाना, मजार की साँकल छूना, कब्रों पर चादर और सेरनी चढ़ाना प्रारम्भ कर दिया। हिन्दू ताजियादारी, अखाडों में या अली की आवाज करने लगे। हिन्दू कुरान को देववाणी के समान मानने लगे। जीवन के बुरे प्रभावों से बचने के लिए अपने घरों में कुरान की प्रतियाँ रखने लगे। भ्रातृत्व प्रदर्शन करने के लिए मुसलमानों को भोजन कराने लगे। चिश्ती के शिष्यों में अनेकों हिन्दू सम्मिलित थे।

मुगल काल में भारत में बहुमुखी सांस्कृतिक विकास हुआ। वास्तुकला, चित्रकला, साहित्य तथ संगीत में ऐसे मानदंड स्थापित किए गये जिनसे बाद की पीढ़ियाँ अत्यन्त प्रभावित हुईं। इस दृष्टि से उत्तर भारत में गुप्त काल के बाद मुगल काल को द्वितीय क्लासिकी युग माना जा सकता है। इस काल में भारतीय तथा मुगलों द्वारा लाई गई तुर्की और ईरानी संस्कृतियों का समन्वय हुआ। समरकंद में तर्की दरबार का पश्चिम तथा मध्य एशिया के सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में विकास हुआ था। बाबर इस सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूक था। वह भारत की संस्कृति के कई पहलुओं का आलोचक तथा उनके लिए उचित मानदण्ड स्थापित करने के लिए दृ ढ़ था। चौदहवीं और पंद्रहवीं शताब्दी में भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कला और संस्कृति का जो बहुमुखी विकास हुआ था उसके बिना मुगल काल की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ असंभव सी होतीं। मुगल काल के सांस्कृतिक विकास में भारत के विभिन्न हिस्सों, मतों तथा जातियों ने विभिन्न प्रकार से योगदान दिया था। इस अर्थ में इस काल का सांस्कृतिक विकास नहीं अर्थों में राष्ट्रीय संस्कृति के विकास के रूप में था ।

शोध का महत्त्व

हिन्दू और मुस्लिम दोनों सभ्यताओं और संस्कृतियों ने धार्मिक क्षेत्र में एक दूसरे पर काफी प्रभाव डाला। धार्मिक क्षेत्र में मुसलमानों के कुछ महत्वपूर्ण तथा स्थाई योगदान हुए। मुसलमान मूर्ति–पूजक नहीं हैं। हिन्दुओं ने भी किसी हद तक मूर्ति पूजा के सम्बन्ध में उनके विचारों को ग्रहण किया। हिन्दुओं की मूर्ति–पूजा का भी मुसलमानों पर प्रभाव पड़ा। यदि हिन्दुओं में बहुत से लोगों ने मूर्ति पूजा का परित्याग कर दिया तो एक बड़ी संख्या में मुसलमानों ने भी मूर्ति पूजा को अपनाया। गाँवों में अनेक मुसलमानों ने कब्रों को पूजना आरम्भ कर

दिया। वह हिन्दू धर्म का उन पर स्पष्ट प्रभाव था। कब्रों पर फूल बताशे चढ़ाना और उन पर धूप या सुगन्धित पदार्थ जलाकर उनके आगे प्रार्थना करना यदि मूर्ति पूजा नहीं है तो और क्या है।

मुसलमानों के एकेश्वरवाद के सिद्धान्त ने हिन्दू धर्म को बड़ा प्रभावित किया और परिणामस्वरूप हिन्दुओं में बढ़ते जा रहे अनेकेश्वरवाद में ढिलाई आने लगी। साहित्य के क्षेत्र में भी दोनों संस्कृतियों का अति सुन्दर समन्वय हुआ ।

हिन्दी फारसी के मिश्रण से श्उर्दूश नामक एक नई भाषा का प्रादुर्भाव हुआ। अनेक मुस्लिम कवियों ने हिन्दी भाषा को अपना कर काव्य रचना की, इनमें अमीर खुसरो तो अपने लोक गीतों के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं ही इसके अतिरिक्त अब्दुर्रहमान की श्रहीम–सतसईश्ए कुतबन की श्मृगावतीश और जायसी के श्पद्मावतश से तो सब परिचित हैं ही। कट्टर मुसलमान सुल्तान सिकन्दर लोदी ने भी श्निब्ब सिकन्दरीश के नाम से आयुर्वेद का और अकबर ने श्रज्मनामाश नाम से महाभारत का फारसी में अनुवाद कराया ।

प्रसिद्ध इतिहासकार बदायूँनी ने श्रामायणश का अनुवाद किया। इसके अतिरिक्त श्अथर्ववेदश कुछ उपनिषदों, श्योग वशिष्ट लीलावतीश आदि भारतीय ग्रन्थों के अनुवाद भी फारसी में किए गए। अनेक हिन्दू भी फारसी के अच्छे विद्वान व लेखक हुए। उत्तर प्रदेश के शहरी हिन्दुओं ने तो उर्दू–फारसी को पूरी तरह अपनाया। इस प्रकार दोनों संस्कृतियों में काफी साहित्यिक आदान–प्रदान हुआ।

शोध के उद्देश्य

- हिन्दु–मुस्लिम सम्पर्क से भारत में एक नई संस्कृति का निर्माण हुआ जिसकी अभिव्यक्ति करना।
- इस्लामी सम्पर्क के बाद भारत का सामुद्रिक व्यापार पुनर्जीवित हुआ और विदेशों से सम्पर्क बढ़ने लगे। मुगल काल में भारत में बहुमुखी सांस्कृतिक विकास होना।
- हिन्दु मुस्लिम दोनो के एक–दूसरे के सम्पर्क में आने से परिवार में रहन–सहन और पहनावे में अंतर आया।
- हिन्दू और फारसी के एक–दूसरे के सम्पर्क में आने से उर्दु भाषा का जन्म हुआ जिससे इस भाषा में कई रचनाएं भी की गई।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एस.आर.शर्मा : भारत में मुस्लिम शासन का इतिहास
2. दिनेश चन्द्र भारद्वाज : मध्यकालीन भारतीय संस्कृति
3. बी.एन. लूनिया : ष्भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का विकासष्।
4. डॉ० आशीर्वादीलाल : मुगलकालीन भारत।
5. डॉ० आशीर्वादीलाल : दिल्ली सल्तनत।
6. गौरी शंकर हीराशंकर ओझा : मध्यकालीन भारतीय संस्कृति ।
7. प्रताप सिंह : मध्यकालीन भारत (1200–1526).
9. के०ए०,: निजामी स्टडीज इन मैडिविल, इण्डियन हिस्ट्री एण्ड कल्चर, इलाहाबाद, 1966।
10. के०एम० अशरफ, : लाइफ एण्ड कंडीशन ऑफ पीपुल ऑफ हिन्दुस्तान, नई दिल्ली 1970।
11. एस०एम०, : जफर दि मुगल एम्पायर फ्रॉम बाबर टु औरंगजेब, दिल्ली 1974।

❑❑❑